THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

# सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

**डॉ॰ संत लाल सर्वा (असिस्टेंट प्रोफेसर),**
श्री गंगानगर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर।

**सारांश:**

***वर्तमान समय में अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है।इस अध्ययन में Dr. G.P. Sherry एवं R.P. Verma द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इनसे प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, माध्य विचलन तथा t-test के द्वारा किया गया है। प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में कुछ आयामों पर सार्थक अन्तर पाया गया।***

**प्रस्तावना**

मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चुनाव निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। जब हम दो या दो से अधिक वस्तुओं मंे चुनाव करते हैं तो उस वस्तु को प्राप्त करने का निश्चय करते है जो अधिक श्रेष्ठ है और इसी निर्णय के अनुसार जीवन में कार्य करते हैं। इस चुनाव, निर्णय तथा निश्चय में उन वस्तुओं के मूल्य की अवधारणा छीपी हैं।

मूल्य वह है जो मानव इच्छा को पूरा करता है। मानव की इच्छाओं को पूरा क्यों करना चाहिए? इसका उत्तर यह होगा कि जीवित रहने के लिए इच्छाएं पूरी करनी पड़ती हैं। परन्तु हम जीवित रहने के लिए कुछ लक्ष्य या उद्देश्य बनातें हैं। एक व्यक्ति कहता है कि वह कला की साधना के लिए, दूसरा कहता कि वह सत्य की खोज के लिए और तीसरा कहता है कि वह ईश्वर प्राप्ति के लिए जीवित रहना चाहता है। एक कलाकार कला की रचना क्यों करना चाहता क्योंकि उसके अनुसार कला तो कला के लिए है। इसी

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

तरह सत्य सत्य के लिए, भलाई भलाई के लिए, कत्र्तव्य कत्र्तव्य के लिए तथा ईश्वर ईश्वर के लिए है। इस तरह हम ऐसे मूल्यांे की अवधारणा पर पहुँच जाते हैं जो अन्तिम मूल्य है, जिनको अपने आप में मूल्य मानना चाहिए, वे परम मूल्य हैं। दर्शन में इन्ही स्वतः मूल्यों को मौलिक माना जाता है क्योंकि ये मनुष्य के उद्देश्य हैं। ये उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन हैं, जो परतः मूल्य हैं। यदि उद्देश्य मूल्यवान है तो उसको प्राप्त करने का साधन भी मूल्यवान होगा, जैसे चश्में का प्रयोग देखने के लिए होता है, यही उसका मूल्य है। वास्तव मंे परतः मूल्य अपने आप में मूल्य ही नही है। स्वतः मूल्य ही वास्तविक मूल्य है।

सी. वी. गुड के अनुसार-"मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्य-बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। लगभग सभी विचार मूल्यों के अभिष्ट चरित्र को स्वीकार करते हैं।"

मूल्य किसी समाज की आत्मा होते हैं। व्यक्तिगत मूल्य व्यक्ति के विचार, दृष्टिकोण एवं आचरण को दिशा प्रदान करते हैं। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नही है, बल्कि विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्यों का विकास करना भी है। वर्तमान समय में सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों की की शैक्षिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक संरचना में प्रयाप्त अन्तर देखने को मिलता है, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों के मूल्यों पर भी पड़ सकता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये।

**शोध की आवश्यकता एवं महत्व-**

सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में केवल शैक्षणिक उपलब्धि ही नही बल्कि विद्यार्थियों के धार्मिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत मूल्यों का विकास भी अति आवश्यक है। सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के शैक्षणिक वातावरण, संसाधनों, अनुशासन, शिक्षण विधियों तथा सह-शैक्षिक गतिविधियों में भिन्नता होने के कारण विद्यार्थियों के मूल्यों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है जिसे वैज्ञानिक रूप से समझना आवश्यक हो जाता है। यह अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

कि इसके माध्यम से विद्यार्थियों में विद्यमान व्यक्तिगत मूल्यों की वास्तविक स्थिति का पता लगाया जा सकेगा तथा दोनों प्रकार के महाविद्यालयों के बीच समानताओं और अन्तरों को स्पष्ट किया जा सकेगा। शोध के निष्कर्ष शिक्षकों और प्रशासकों को मूल्य आधारित शिक्षण गतिविधियां विकसित करने तथा शिक्षा नितियों को ओर अधिक प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकेगा। साथ ही यह अध्ययन भविष्य में लिंग, विषय, सामाजिक पृष्ठभूमि तथा अन्य कारकों के संदर्भ में होने वाले अनुसंधानों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करेगा।

**समस्या कथनः**

सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

**शोध के उद्देश्यः**

1. सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों मेंसामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों मेलोकतांत्रिक मूल्यों का अध्ययन करना।

**शोध की परिकल्पनाएँ**

1. सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

**न्यादर्श-**

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान के लिए जनसंख्या विभिन्न महाविधालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राएँ इस शोध में अध्ययन हेतु अभिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले के सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों से 200 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है। जिनमंे 100 सरकारी तथा 100 निजी महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त उपकरण-**

प्रस्तुत शोध में डाॅ. जी. पी. शेरी तथा आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्यों से सम्बंधित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जिसमें विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्यों से सम्बंधित प्रश्न है, जैसे-

क - धार्मिक मूल्य

ख - सामाजिक मूल्य

ग - लोकतांत्रिक मूल्य

घ- सौन्द्रयात्मक मूल्य

च - आर्थिक मूल्य

छ - ज्ञान मूल्य

ज -सुखवादी मूल्य

झ- शक्ति मूल्य

ट - पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य

ठ - स्वास्थ्य मूल्य

**तकनीकी शब्दों की व्याख्या:-**

सरकारी महाविद्यालयः- ये महाविद्यालय राज्य सरकार या केन्द्र सरकार द्वारा संचालित होते हैं।

निजी महाविद्यालयः- ये महाविद्यालय किसी निजी ट्रस्ट, संस्था या सोसायइटी द्वारा संचालित होते हैं।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

व्यक्तिगत मूल्य-मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्य-बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। लगभग सभी विचार मूल्यों के अभिष्ट चरित्र को स्वीकार करते हैं।

**सांख्यिकीः-**प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है-

1. मध्यमान 2. प्रमाप विचलन 3. क्रांतिक अनुपात।

विश्लेषण-आँकड़े संकलन के पश्चात उनके आधार पर परिमाप व निष्कर्ष तभी प्राप्त किये जा सकते हैं जब उनको सही तरीके से सारणीबद्ध व विश्लेषित किया जाये। इसलिए शोधकत्र्ता द्वारा संकलित आँकड़ों को इस प्रकार से विश्लेषित किया गया है-

1. **"सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण"**

| मूल्य | महाविद्यालय | विद्यार्थी संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी–मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| धार्मिक मूल्य | निजी | 100 | 12.45 | 1.54 | 2.78 |
| | सरकारी | 100 | 13.34 | 1.62 | |

व्याख्याः-

उपरोक्त परिकल्पना से सम्बंधित तालिका में दत्त विश्लेषण के अनुसार राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य को प्रदर्शित करने वाला टी-मूल्य 2.78 है जो ज.अंसनम की तालिका (सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01) में प्राप्त मान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि निजी एवं सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

2. **"सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"**

| मूल्य | महाविद्यालय | विद्यार्थी संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी–मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| सामाजिक | निजी | 100 | 13.11 | 1.68 | 3.45 |

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मूल्य | सरकारी | 100 | 11.97 | 1.62 | |

व्याख्याः-

उपरोक्त परिकल्पना से सम्बंधित तालिका में दत्त विश्लेषण के अनुसार राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों केसामाजिक मूल्य को प्रदर्शित करने वाला टी-मूल्य 3.45 है,जो ज.अंसनम की तालिका (सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01) में प्राप्त मान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि निजी एवं सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

3. **"सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"**

| मूल्य | महाविद्यालय | विद्यार्थी संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी–मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| लोकतांत्रिक मूल्य | थ्नजी | 100 | 13.11 | 1.64 | 3.39 |
| | स्रकारी | 100 | 12.05 | 1.49 | |

व्याख्याः-

उपरोक्त परिकल्पना से सम्बंधित तालिका में दत्त विश्लेषण के अनुसार राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्य को प्रदर्शित करने वाला टी-मूल्य 3.39 है, जो ज.अंसनम की तालिका (सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01) में प्राप्त मान से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि निजी एवं सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

**निष्कर्षः-**

प्रस्तुत शोध के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य को प्रदर्शित करने वाला टी-मूल्य 2.78 है तालिका में प्राप्त मान से अधिक

होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। इससे स्पष्ट है कि दोनो प्रकार के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्यों का स्तर एक समान नही है।

2. सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य को प्रदर्शित करने वाला टी-मूल्य 3.45 है जो ज.अंसनम की तालिका में प्राप्त मान से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। अतः दोनो प्रकार के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के विकास में अन्तर सम्भवतः महाविद्यालय के वातावरण के प्रभाव के कारण है।

3. सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्य को प्रदर्शित करने वाला टी-मूल्य 3.39 है जो ज.अंसनम की तालिका में प्राप्त मान से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। अतः दोनो प्रकार के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में अन्तर सम्भवतः महाविद्यालय के वातावरण, संरचना एवं शैक्षिक परिवेश की भूमिका के प्रभाव के कारण है।

अतः मुख्य रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के शैक्षिकवातावरण, संसाधनों, अनुशासन, सह-शैक्षिक गतिविधियों तथा प्रशासनिक व्यवस्था में भिन्नता आदि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मूल्यों के विकास को प्रभावित करती है।

शैक्षिक उपयोगिताः-

विद्यार्थियांे के जीवन में व्यक्तिगत मूल्यों का बहुत अधिक महत्व है। अतः उपरोक्त तथ्यों से सम्बंधित प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में अति उपयोगी है। प्रस्तुत शोध प्रशासकों एवं शिक्षकों को यह समझने में सहायता प्रदान करेगा कि संस्थागत वातावरण, संसाधन, अनुशासन तथा सह-शैक्षिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों के विकास को प्रभावित करती है। इसलिए महाविद्यालयों में मूल्य आधारित शिक्षा को अधिक सुदृढ़ एवं योजनाबद्ध तरीके से लागु किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों तथा सह-शैक्षिक गतिविधियों में ऐसे कारकों का समावेश किया जाना चाहिए जो विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहिष्णुता एवं लोकतांत्रिक भावना के विकास को बढ़ावा दे सके। इस प्रकार प्रस्तुत शोध शिक्षा-निति निर्माण, संस्थागत सुधार तथा प्रभावी मूल्य आधाारित शिक्षा कार्यक्रमों के संचालन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

**भावी शोध हेतु सूझावः-**

1. भावी शोध राजस्थान के अन्य जिलों पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है भावी शोध सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
3. इस शोध को अन्य राज्यों के विभिन्न व्यवसायों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयांे के प्रशिक्षणार्थियों पर भी किया जा सकता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः-**

1. शर्मा आर. ए. शिक्षा अनुसंधान आर. सूर्या पब्लिकेशन मेरठ
2. कपिल एच के अनुसंधान की विधियां वेदान्त पब्लिकेशन वर्ष 2001
3. त्रिवेदी एवं शुक्ला रिसर्च मैथडोलाॅजी काॅलेज बुक डिपो जयपुर।
4. सिंह मनोज कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2021) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के प्रभावों का रीवा जिले के शहरी व ग्रामीण अंचल के छात्रों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।
5. यादव विजय शंकर एवं डाॅ. एल सिंह बघेल (2018) इलाहबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की तार्किक योग्यता का अध्ययन।
6. सक्सेना स्वरूप आर एन - शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ